# संभावनाओं भरा हिंदी जगत

## जन जीवन से जुड़े सभी क्षेत्रों में हिंदी के प्रचलन को सुनिश्चित करने की आवश्यकता पर बल दे रहे हैं **गिरीश्वर मिश्र**

**देश विदेश** में पसरा हिंदी जगत बड़ी उत्सुक और कुछ आश्वस्ति की नजरों से दसवें विश्व हिंदी सम्मेलन की ओर देख रहा है। भोपाल में आज से शुरू हो रहा यह सम्मेलन कई कारणों से महत्वपूर्ण है। पिछले कई सम्मेलन भारत से बाहर आयोजित हुए और अब जब इसकी घर वापसी हुई है तो घर का माहौल बदला-बदला सा है। वह घर ऐसा है जहां आज हिंदी भाषा के प्रति सहिष्णुता का भाव पहले की अपेक्षा कुछ अधिक है। प्रधानमंत्री देश और विदेश, दोनों ही जगह प्रायः हिंदी में ही संबोधित करना पसंद करते हैं। आज तकनीकी प्रगति संचार, प्रकाशन और संवाद की अनेक खिड़कियां खोल रही है, जिसके फलस्वरूप राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय अंतर्संबंधों की जमीनी हकीकत और उसकी समझ बदल रही है और एक दूसरे के ऊपर अवलंबन भी बढ़ा है। ऐसे में हिंदी का एक वातावरण बन रहा है। यह सम्मेलन हिंदी के प्रति भारत की सतत प्रतिबद्धता का प्रमाण तो है ही, भारत की अपनी वाणी का वैश्विक स्तर पर उपस्थिति दर्ज कराने का एक सबल माध्यम भी है। यह भी एक शुभ लक्षण है कि आज हिंदी को लेकर प्रचलित हीनता की ग्रंथि से हम धीरे-धीरे उबर रहे हैं। स्मरणीय है कि हिंदी का प्रश्न सिर्फ एक भाषा के उत्थान-पतन का प्रश्न नहीं है। हिंदी देश की पहचान, उसके गौरव, कला और सांस्कृतिक धरोहर से भी जुड़ी है। वह बौद्धिक क्षमता, कौशल से भी जुड़ी है। वह कुशल मानव संसाधन के निर्माण और देश को सक्षम और समर्थ बनाने की चुनौती से भी जुड़ी है। हिंदी का अर्थ है देश की अपनी भाषा में देश का आह्वान करना। हमारी सोच में देश कहीं भूल भटक गया था, बाकी बच रहा था केवल 'मैं' और वह भी देसी बनने के पहले भूमंडलीकृत यानी ग्लोबल हो रहा था। जहां देसी होना, भारतीय होना, हिंदी और हिंदवी होना पिछड़ापन का प्रतीक बनता गया वहीं अंग्रेजी प्रगति, ज्ञान, संपत्ति और विवेक की अधिष्ठात्री देवी बन गई जिसकी आराधना से सभी पुरुषार्थों की सिद्धि हो सकती है। भारतीयों के लिए हिंदी से जुड़ना देश से जुड़ना है और खुद को अपनी शर्तों पर परिभाषित करने जैसा है।

विश्व हिंदी सम्मलेन के आयोजन की अब तक की उपलब्धियां सीमित रही हैं। हर बार सम्मलेन में प्रस्ताव पारित करने का अनुष्ठान किया जाता है। प्रायः ये प्रस्ताव कागजी औपचारिकता तक सिमट जाते हैं। पिछले वर्षों में विश्व हिंदी सचिवालय मॉरीशस में स्थापित होने से और महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विवि द्वारा विदेशी छात्रों के लिए हिंदी का मानक पाठ्यक्रम बनाने से लेकर बहुत

**दसवां विश्व हिंदी सम्मेलन**

◆ **हिंदी यदि जीवित है तो अपनी जीवनी शक्ति से, क्योंकि राजभाषा, मातृभाषा, संपर्क भाषा जैसे प्रश्नों पर टाल मटोल ने अंग्रेजी को ही बढ़ावा दिया है**

कुछ हुआ है। आज हिंदी सेवियों का आदर सम्मान हो रहा है। कई संस्थाएं, कुछ उत्साही व्यक्ति, केंद्र सरकार और राज्य सरकारें अपने-अपने ढंग से हिंदी में प्राण फूंकने का यत्न कर रहे हैं। मीडिया जगत में भी हिंदी आगे बढ़ी है, लेकिन यह सब पर्याप्त नहीं है।

दसवां हिंदी सम्मलेन 'हिंदी जगत के विस्तार और उसकी संभावनाओं' को समर्पित है। यह विषय हिंदी को उसकी विभिन्न भूमिकाओं के लिए तैयार करने के लिए आमंत्रित करता है। सम्मेलन में मुख्य रूप से विदेश नीति, प्रशासन, विज्ञान, सूचना तकनीक, विधि, बाल साहित्य, हिंदीतर राज्य, पत्रकारिता, गिरमिटिया, विदेश में हिंदी अध्यापन, भारत में हिंदी अध्ययन की सुविधा तथा प्रकाशन से जुड़े प्रश्नों पर विचार प्रस्तावित है। विदेश मंत्री की देखरेख यह आयोजन हिंदी की सामर्थ्य को व्यवहार में लाने के लिए प्रतिबद्ध है। हिंदी को लेकर चिंता महज एक भाषा को संरक्षण देने की नहीं है। हमारी औपनिवेशिक प्रवृत्ति ने अंग्रेजी और अंग्रेजियत को समाज, सरकार और शिक्षा में स्थापित कर हमारे आत्मबोध और संस्कृति को लेकर संशय भी पैदा किया है और सृजनात्मकता को भी कुंद किया है। मातृभाषा के पक्ष में भाषा वैज्ञानिक तर्क को दरकिनार कर कक्षा एक से ही अंग्रेजी पढ़ाने की कवायद जारी है। हिंदी यदि जीवित है तो अपनी जीवनी शक्ति से, क्योंकि राजभाषा, मातृभाषा, संपर्क भाषा जैसे प्रश्नों पर टाल मटोल ने अंग्रेजी को ही बढ़ावा दिया है। गोस्वामी तुलसीदास के सामने भी द्वंद्व था कि किस भाषा में लिखें और उन्होंने निःसंकोच देवभाषा संस्कृत को छोड़ लोक भाषा अवधी को चुना और वह चुनाव कितना सही था, यह बताने की जरूरत नहीं है। उनके रामचरितमानस' तक फिर कोई और ग्रंथ नहीं पहुंच सका। गोस्वामी जी कहते हैं कि असली चीज है प्रेम-'का भाषा का संस्कृत प्रेम चाहिए सांच।' तो सच्ची लगन और व्यापक जनाधार ही भाषा व्यवहार का आधार होना चाहिए।

आजकल हिंदी के लिए देवनागरी के बदले रोमन लिपि अपनाने की तजबीज दी जा रही है और हिंग्लिश के उपयोग को भी ठीक बताया जा रहा है। यह सब हिंदी को खारिज करने का ही यत्न है। हिंदी ने संस्कृत, फारसी, तुर्की, अंग्रेजी आदि भाषाओं के शब्दों को सदैव ग्रहण किया है। हिंदी के लिए तकनीकी शब्द गढ़े गए, लेकिन ज्यादातर को स्वीकृति नहीं मिली। ऐसे में आवश्यकता है कि भोजपुरी, अवधी, ब्रज, मैथिली और अन्य सहभाषाओं से हिंदी को समृद्ध किया जाए। हमें हिंदी भाषा और साहित्य के उन रूपों को भी आदर की दृष्टि से देखना होगा जो अन्य देशों में प्रचलित है। आज ज्ञान-विज्ञान का विस्तार भौगोलिक सरहदों को पार कर सार्वजनीन हो रहा है. इसका लाभ न लेने पर हम पिछड़ जाएंगे। इसलिए हिंदी और अन्य भाषाओं के बीच अनुवाद करने की स्थायी और प्रभावी योजना आवश्यक है। सूचना और संचार तकनीक का उपयोग करते हुए इस दिशा में आवश्यक कदम उठाए जाने चाहिए। हिंदी की दुर्लभ पांडुलिपियों का संग्रह और प्रकाशन का कार्य भी अंतरराष्ट्रीय स्तर नियमित रूप से होना चाहिए।

हिंदी देश की राष्ट्रभाषा की आकांक्षा का मूर्तरूप है। वह विदेशों में गए बहुत से भारतीयों के साथ ही दूर देशों में पीढ़ियों पहले जा बसे उन शर्तबंदी भारतीयों की भी भाषा है जो कठिन परिस्थतियों में जीवट के साथ संघर्ष करते आगे बढ़े। उम्मीद की जानी चाहिए कि यह विश्व हिंदी सम्मेलन सरकारी कामकाज, शिक्षा, उद्योग-धंधे, न्याय, स्वास्थ्य आदि क्षेत्रों में हिंदी के प्रचलन को सुनिश्चित करने की दिशा में फलदायी और हिंदी को वैश्विक संदर्भ में स्थापित करने की दिशा में कारगर साबित होगा।

*(लेखक महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विवि के कुलपति हैं)*

*response@jagran.com*